गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 180
दि. 01.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

सरकार खुलकर खर्च कर रही है, 4 महीने में 70% बढ़ा राजकोषीय घाटा, इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोरदार निवेश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। केंद्र सरकार विकास की रफ्तार बढ़ाने के लिए खुलकर खर्च कर रही है, जिसका सीधा असर देश के राजकोषीय घाटे पर दिखने लगा है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 के पहले चार महीनों यानी अप्रैल से जुलाई के बीच राजकोषीय घाटा 70% तक उछलकर 4.68 लाख करोड़ पहुंच गया है। यह पूरे साल के बजटीय अनुमान का लगभग 29.9% है। पिछले वर्ष इसी अवधि में यह आंकड़ा 2.77 लाख करोड़ था।

कंट्रोलर जनरल ऑफ अकाउंट्स (CGA) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, इस तेजी की सबसे बड़ी वजह पूंजीगत व्यय (कैपिटल एक्सपेंडिचर) में 31% की भारी वृद्धि है। सरकार ने इस अवधि में 3.47 लाख करोड़ का निवेश इंफ्रास्ट्रक्चर और सार्वजनिक परियोजनाओं में किया, जबकि पिछले साल यह खर्च 2.61 लाख करोड़ था। सरकार का मानना है कि यह खर्च देश की विकास गति को बनाए रखने और रोज़गार सृजन के लिए ज़रूरी है।

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए केंद्र ने राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी के 4.4% पर रखा है, जो पिछले वर्ष के 4.8% से कम है। लेकिन शुरुआती चार महीनों के आंकड़े बताते हैं कि लक्ष्य तक पहुंचने के लिए वित्तीय अनुशासन और राजस्व सुधार की बड़ी चुनौती बनी हुई है।

राजस्व प्राप्ति और कुल खर्च की स्थिति

सरकार का कुल खर्च इस अवधि में 13 लाख करोड़ से बढ़कर 15.64 लाख करोड़ हो गया है, जो पूरे साल के लक्ष्य का 31% है। वहीं टैक्स से शुद्ध कमाई में गिरावट दर्ज की गई है। अप्रैल-जुलाई के बीच नेट टैक्स रेवेन्यू 6.62 लाख करोड़ रहा, जो पिछले साल 7.15 लाख करोड़ था। टैक्स फाइलिंग की समय सीमा बढ़ने से इस कमी का कुछ असर देखने को मिला है। गैर-कर राजस्व (नॉन-टैक्स रेवेन्यू) 4.03 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो लक्ष्य का 69.2% है। कुल राजस्व प्राप्तियां 10.95 लाख करोड़ रहीं, जो वार्षिक लक्ष्य का 31.3% है।

सब्सिडी के मोर्चे पर सरकार ने सख्ती दिखाई है। मुख्य सब्सिडियों पर खर्च पिछले साल के 1.26 लाख करोड़ से घटकर 1.14 लाख करोड़ रह गया है, जो वित्तीय अनुशासन की दिशा में सकारात्मक संकेत देता है।

कैपिटल स्पेंडिंग से घाटा बढ़ा, पर विकास को मिल रही रफ्तार

समीक्षाधीन अवधि में केंद्र सरकार का कुल व्यय 23 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो बजट अनुमान का 45.5% है। इसमें 17.22 लाख करोड़ राजस्व खाते में और 5.8 लाख करोड़ पूंजीगत खाते में खर्च हुए। ब्याज भुगतान पर 5.78 लाख करोड़ और सब्सिडी पर 2.02 लाख करोड़ खर्च किए गए।

रेटिंग एजेंसी इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि पूंजीगत व्यय में 40% की वृद्धि ने राजकोषीय घाटे को तेज़ी से बढ़ाया है। उन्होंने अनुमान जताया कि वर्ष की दूसरी छमाही में खर्च पर कुछ नियंत्रण और गैर-कर राजस्व में बढ़ोतरी से टैक्स आय में आई कमी की भरपाई संभव हो जाएगी।

कुल मिलाकर, सरकार का फोकस अब भी इंफ्रास्ट्रक्चर, सार्वजनिक निवेश और विकास परियोजनाओं पर है। हालांकि, राजस्व संग्रह की रफ्तार धीमी रहने से वित्त मंत्रालय पर दबाव बढ़ा है। आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है कि यदि आगामी महीनों में टैक्स कलेक्शन और डिसइन्वेस्टमेंट से पर्याप्त आमदनी हो गई, तो वित्तीय संतुलन बनाए रखना संभव होगा — वरना चालू वर्ष के अंत तक घाटा फिर बढ़ सकता है।

हिंद महासागर में चीन की हलचल पर नौसेना की पैनी नजर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। हिंद महासागर में बढ़ती चीन की सैन्य गतिविधियों के बीच भारतीय नौसेना ने स्पष्ट कर दिया है कि वह पूरी तरह चौकस है और किसी भी प्रकार की उकसाने वाली कार्रवाई का जवाब देने में सक्षम है। नौसेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल संजय वात्स्यायन ने शुक्रवार को कहा कि "ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है। नौसेना की तैनाती पूरी तरह सक्रिय है, और किसी भी स्थिति में दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।" वाइस एडमिरल वात्स्यायन ने कहा कि नौसेना हिंद महासागर में सक्रिय हर चीनी युद्धपोत, सर्वेक्षण जहाज और खुफिया पोत की गतिविधियों पर करीबी निगरानी रख रही है। भारत की नौसेना केवल देश की सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी निभा रही है। उन्होंने कहा, "भारत क्षेत्रीय स्थिरता और समुद्री सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। कोई भी देश अगर स्थिति को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, तो जवाब तुरंत और निर्णायक होगा।"

वाइस एडमिरल वात्स्यायन अंतरराष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू, 'मिलन अभ्यास' और 'आईओएनएस चीफ्स कॉन्क्लेव' की तैयारियों की जानकारी दे रहे थे। उन्होंने बताया कि यह आयोजन 18 फरवरी 2026 को विशाखापत्तनम में होगा, जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु भारतीय नौसेना के बेड़े की समीक्षा करेंगी। इस अवसर पर स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत और कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियाँ भी अपने सामरिक कौशल का प्रदर्शन करेंगी।

55 देशों की भागीदारी तय, अमेरिका और रूस भी होंगे शामिल

इस बार के आयोजन में अब तक 55 से अधिक देशों ने अपनी उपस्थिति की पुष्टि की है। इनमें अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और कई अन्य देशों के जहाज और प्रतिनिधिमंडल शामिल होंगे। मिलन अभ्यास 20 से 25 फरवरी के बीच आयोजित किया जाएगा, जिसे हिंद महासागर क्षेत्र का सबसे बड़ा नौसैनिक युद्धाभ्यास माना जा रहा है।

भारतीय नौसेना इस वर्ष नवंबर में गुआम में होने वाले 'मालाबार अभ्यास' में भी हिस्सा लेगी। वाइस एडमिरल ने कहा कि इन अंतरराष्ट्रीय अभियानों से भारत की समुद्री क्षमता और रणनीतिक साझेदारी और मजबूत होगी। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी सभी अंतरराष्ट्रीय गतिविधियाँ बिना किसी बाधा के जारी हैं।

जहाजों पर सैन्य हमला अस्वीकार्य, अमेरिका पर संयुक्त राष्ट्र का कड़ा प्रहार, जांच की उठी मांग

(जीएनएस)। जिनेवा। संयुक्त राष्ट्र ने अमेरिका पर तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि दक्षिण अमेरिकी समुद्री क्षेत्र में ड्रग्स की तस्करी के नाम पर जहाजों पर किए जा रहे सैन्य हमले "अस्वीकार्य और गैरकानूनी" हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार संगठन ने इन घटनाओं की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच की मांग की है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय की प्रवक्ता रवीना शमदासानी ने जिनेवा में बताया कि मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर टर्क ने इन हमलों को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा, "पिछले दो महीनों में अमेरिकी नौसेना और वायुसेना द्वारा किए गए हमलों में 60 से अधिक लोगों की मौत हुई है। इन मृतकों में कई निर्दोष नागरिक भी शामिल हैं, जो किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है।"

टर्क ने चेतावनी दी कि यह कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानूनों और समुद्री संधियों का गंभीर उल्लंघन प्रतीत होती है। उनके अनुसार, "किसी देश को यह अधिकार नहीं है कि वह संप्रभु जलक्षेत्रों के बाहर ऐसी घातक कार्रवाई करे, जो निर्दोषों की जान ले। ड्रग्स या अवैध व्यापार से निपटने के लिए हवाई हमले नहीं, बल्कि कानूनी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है।" संयुक्त राष्ट्र के इस बयान के बाद वैश्विक स्तर पर बहस छिड़ गई है, क्योंकि यह पहली बार है जब संयुक्त राष्ट्र के किसी संगठन ने सार्वजनिक रूप से अमेरिका की सैन्य नीति की खुलकर आलोचना की है। दूसरी ओर, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने बयान में इन कार्रवाइयों का बचाव करते हुए कहा कि "अमेरिका किसी निर्दोष को निशाना नहीं बना रहा, बल्कि ड्रग्स माफिया और तस्करों के नेटवर्क को खत्म करने के लिए निर्णायक कदम उठा रहा है।" ट्रंप ने यह भी कहा कि ड्रग्स से संबंधित गतिविधियाँ अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन चुकी हैं, और उनके खिलाफ "कठोर कार्रवाई" ज़रूरी है।

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख टर्क ने कहा, "ड्रग्स या आतंकवाद से लड़ाई केवल कानून प्रवर्तन एजेंसियों के दायरे में रहनी चाहिए। किसी भी देश को मानवाधिकारों की अवहेलना कर सैन्य अभियान चलाने का अधिकार नहीं है। ऐसे हमले न केवल अंतरराष्ट्रीय स्थिरता को खतरे में डालते हैं, बल्कि निर्दोष जीवनों को भी जोखिम में डालते हैं।"

उन्होंने अमेरिकी प्रशासन से अपील की कि वह इन सैन्य कार्रवाइयों को तत्काल रोके, जवाबदेही तय करे, और मृतकों के परिवारों को न्याय दिलाए।

विश्लेषकों का कहना है कि यह विवाद आने वाले समय में अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र के संबंधों में तनाव बढ़ा सकता है, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र की यह आलोचना अमेरिकी वैश्विक नीति पर एक राजनयिक दबाव के रूप में देखी जा रही है।

17 देशों की रोमांचक सड़क यात्रा कर 'द स्टोन विलेज' पहुंचे नीदरलैंड के पर्यटक, चंदेरी में हुआ परंपरागत स्वागत

(जीएनएस)। चंदेरी। मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक शहर चंदेरी की शांत वादियों में गुरुवार रात एक अनोखा नज़ारा देखने को मिला, जब नीदरलैंड से आए 12 विदेशी पर्यटकों का काफिला 17 देशों की लंबी और रोमांचक सड़क यात्रा पूरी करते हुए 'द स्टोन विलेज' विक्रमपुर पहुंचा। यह दल अपनी ही सात लग्ज़री टोयोटा कारों से हजारों किलोमीटर की यात्रा तय कर भारत पहुंचा है। नीदरलैंड की राजधानी एम्स्टर्डम से निकले इन यात्रियों ने अब तक जर्मनी, ऑस्ट्रिया, रोमानिया, बुल्गारिया, तुर्की, जॉर्जिया, आज़रबैजान, ईरान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिज़िया, रूस, चीन, तिब्बत और नेपाल जैसे देशों से होते हुए भारत की धरती पर प्रवेश किया। उनके वाहन आधुनिक तकनीक से लैस हैं, जिनमें जीपीएस, कैंपिंग टेंट और छोटी रसोई तक की सुविधा मौजूद है।

चंदेरी के विक्रमपुर गांव पहुंचने पर ग्रामीणों और ग्राम समिति ने विदेशी मेहमानों का भव्य स्वागत किया। फूल-मालाओं, तिलक और ढोल-नगाड़ों के बीच मेहमानों का आगमन किसी उत्सव से कम नहीं लगा। ग्राम प्रधान और स्थानीय महिलाओं ने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत कर अपनी संस्कृति का परिचय कराया।

समूह की लीडर सुज़ैन ने भावुक होकर कहा—"हमारा उद्देश्य सिर्फ यात्रा नहीं, बल्कि हर देश की आत्मा से जुड़ना है। भारत पहुंचकर ऐसा लग रहा है मानो किसी जीवंत संग्रहालय में कदम रखा हो। चंदेरी की खूबसूरती और यहां के लोगों की आत्मीयता ने हमारा दिल जीत लिया।"

पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने युद्धविराम जारी रखने पर सहमति जताई, कतर और तुर्किये की मध्यस्थता से बनी बात

(जीएनएस)। अंकारा (तुर्किये)। दक्षिण एशिया के अशांत सीमाई क्षेत्र से एक बड़ी राहत भरी खबर आई है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने लंबे तनाव और सीमा झड़पों के बाद युद्धविराम जारी रखने पर सहमति जताई है। यह समझौता तुर्किये और कतर की मध्यस्थता से हुआ है, जिसने दोनों पड़ोसी देशों को एक बार फिर संवाद की राह पर ला दिया है।

तुर्किये के विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार सुबह एक्स (पूर्व ट्विटर) पर जारी संयुक्त बयान में कहा कि "दोनों देशों ने आपसी सम्मान और क्षेत्रीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए युद्धविराम जारी रखने और आगे के लिए स्पष्ट तंत्र बनाने पर सहमति जताई है।" सूत्रों के मुताबिक, इस्तांबुल में बीते शनिवार से चल रही शांति वार्ता शुरुआत में असफल होती दिख रही थी, लेकिन कतर और तुर्किये के राजनयिकों की लगातार कोशिशों के बाद वार्ता में फिर प्रगति हुई। बातचीत के दौरान सबसे बड़ी सफलता यह रही कि दोनों पक्षों ने 'निगरानी एवं सत्यापन तंत्र' (Monitoring and Verification Mechanism) बनाने पर सहमति जताई, जो युद्धविराम के उल्लंघन की स्थिति में जांच करेगा और ज़िम्मेदारी तय करेगा।

संयुक्त बयान में कहा गया है कि अगली बैठक 6 नवंबर को इस्तांबुल में होगी, जिसमें युद्धविराम को लागू करने की रूपरेखा, सीमा सुरक्षा और आतंकवाद से संबंधित चिंताओं पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

तुर्किये और कतर ने अपने बयान में दोनों देशों की "सकारात्मक सोच और सहयोग की भावना" की सराहना की। दोनों मध्यस्थ देशों ने कहा कि वे क्षेत्र में स्थायी शांति, व्यापार और मानवतावादी सहयोग की दिशा में प्रयास जारी रखेंगे।

उल्लेखनीय है कि कतर पहले भी अफगान तालिबान और नाटो बलों के बीच वार्ता में अहम मध्यस्थ की भूमिका निभा चुका है, जबकि तुर्किये ने हाल के वर्षों में इस्लामी देशों के बीच सुलह-संधि में सक्रिय भूमिका अपनाई है।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

ई-नीलामी

माननीय मुख्यमंत्री को मिली

उपहार-स्मृति चिह्नों को खरीदने का गौरवपूर्ण अवसर

सभी लोग इस ई-नीलामी प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं

हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी

ई-नीलामी प्रक्रिया से प्राप्त धनराशि को कन्या शिक्षा पर किया जाएगा खर्च

उपहार-स्मृति चिह्नों की ई-नीलामी प्रक्रिया का होगा शुभारंभ

दिनांकः १ से ३० नवंबर, २०२५ तक

वेबसाइट https://cmgujmemento.gujarat.gov.in

वेबसाइट पर निम्न वस्तुएँ देखी जा सकेंगी

उत्कृष्ट शिल्प | पारंपरिक उपहार | प्रादेशिक कलाकृतियाँ | स्वदेशी हस्तकला

स्मृति चिह्न जैसी अनेकों कीमती एवं सुंदर कलाकृतियाँ

नीलाम होने वाले उपहार-स्मृति चिह्नों की अधिक जानकारी के लिए https://cmgujmemento.gujarat.gov.in पर जाएँ

माननीय मुख्यमंत्री को देश-विदेश से प्राप्त उत्कृष्ट भेंट व स्मृति चिह्नों की नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए

QR कोड को स्कैन करें

जन-जन के कल्याण के लिए वचनबद्ध गुजरात सरकार

आइए, सभी पोर्टल के माध्यम से इस गौरवमय ई-नीलामी में भाग लें

राजकोष, वित्त विभाग, गुजरात सरकार

कन्या शिक्षा के माध्यम से विकसित गुजरात और विकसित भारत के निर्माण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

संपादकीय

चुनावी मौसम में सर्वेक्षण के गुमनाम सूत्र

देश के मौसम वैज्ञानिक भले ही भारत में मौसमों को सर्दी, गर्मी और बरसात तक सीमित बताते हों, लेकिन वे एक और मौसम को रेखांकित करना भूल गए हैं—चुनाव का मौसम।

इस मौसम की खासियत यह है कि इसकी कोई निश्चित अवधि नहीं होती। यह न तो पंचांग में दर्ज है, न मौसम विभाग इसकी भविष्यवाणी कर पाता है। यह मौसम केवल चुनाव आयोग की घोषणा के साथ आता है और मतदान संपन्न होते ही वैसे ही लौट जाता है, जैसे बरसात के बाद अचानक धूप निकल आए।

चुनाव घोषित होते ही सर्वेक्षणों की बहार शुरू हो जाती है। टीवी चैनलों से लेकर सोशल मीडिया तक, हर ओर आंकड़ों का अंबार लग जाता है। कभी कोई सर्वे, कभी कोई—जैसे कोई नया ट्रेंड चल पड़ा हो। अब सर्वेक्षण करवाना राजनीति का अभिन्न हिस्सा बन गया है। नेता और दल इन सर्वेक्षणों का सहारा लेकर अपनी टिकट सुनिश्चित करने या अपने ही दल के प्रतिद्वंद्वी की टिकट कटवाने तक की जुगत में लग जाते हैं। ये सर्वेक्षण कितने प्रामाणिक हैं, इसका कोई ठोस सबूत किसी के पास नहीं होता। सर्वेक्षण किसके द्वारा, कब और कैसे किए गए — इससे किसी को कोई मतलब नहीं।

इन सर्वेक्षणों से किसी उम्मीदवार को लाभ मिले या न मिले, लेकिन मतदाता ज़रूर भ्रमित हो जाता है। हर चैनल पर दिखाया जाने वाला अलग-अलग सर्वे मतदाता को इस कदर उलझा देता है कि वह तय ही नहीं कर पाता कि सच कौन बोल रहा है। हर सर्वे ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि झूठ भी सच लगने लगता है और सच केवल आंकड़ों के नीचे दबकर रह जाता है।

कहने को तो सर्वेक्षण जनता की राय पर आधारित होते हैं, लेकिन यह 'जनता' कौन है — यह कोई नहीं बताता। कभी यह जनता कॉफी शॉप में बैठी मिलती है तो कभी सोशल मीडिया की टिप्पणियों में।

जनता से पूछा गया या नहीं, इसकी पुष्टि कभी नहीं होती, फिर भी परिणाम ऐसे दिए जाते हैं जैसे देश की तकदीर इन्हीं आंकड़ों से तय होगी।

अब सवाल यह भी उठता है कि सर्वेक्षण कला है या विज्ञान?

दरअसल, यह दोनों है। विज्ञान इसलिए कि जैसे हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, वैसे ही हर सर्वे का असर कहीं न कहीं दिखता है। और कला इसलिए कि इसे इतनी सजावट के साथ पेश किया जाता है कि झूठ भी आधा सच लगने लगता है। चुनावी मौसम की एक और खासियत यह है कि इसमें हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में राजनीतिक जानकार बन जाता है। चाय की दुकानों पर बैठे लोग आंकड़ों पर बहस करते हैं, रिक्शेवाला भी प्रतिशत की बात करता है, और पड़ोस के शर्मा जी तो ऐसे नतीजे सुनाते हैं, जैसे चुनाव आयोग उनके घर की छत पर बैठा हो। सच कहिए, अब पूरा देश एक बड़ा न्यूज स्टूडियो बन चुका है—हर कोई अपना चैनल चलाने में लगा है।

बिहार के चुनाव पर नेपाली निगाहें

> सात सीमावर्ती ज़िले बिहार के हैं, जिनके मुख्यालय की राजनीतिक गतिविधियों में नेपाल के लोगों की दिलचस्पी बनी रहती है। चुनावी सभा चाहे दरभंगा में हो, या कि मोतिहारी में, राहुल-मोदी अथवा अमित शाह को देखने नेपाल के लोग पहुंच ही जाते हैं। बिहार में इस तरह के 60 से 65 ज़िले हैं, जिनके भावी विधायकों, मंत्रियों, सांसदों के 'गुड बुक' में बने रहने की कवायद नेपाल में चलती रहती है।

नेपाल के मेट्रो शहर वीरगंज में प्रोफेसर भाग्यनाथ प्रसाद गुप्ता मधेस राजनीति की सुपरिचित शख्सियत में से हैं। फोन पर पूछा, कि आम नेपाली किस नुक्ते-नज़र से बिहार चुनाव को देखता है? जवाब, एक नेपाली कहावत के रूप में पेश था- 'अन्धो गाई र लंगडो गोरु' अर्थात, 'अंधी गाय और लंगड़ा बैल'। ऐसी कहावत का उपयोग तब किया जाता है, जब दो असमर्थ लोग मिलकर एक दूसरे की मदद करते हैं। इस कहावत के बहुआयामी निहितार्थ हैं। संसाधनों के मामलों में नेपाल सम्पूर्ण नहीं है। जहां उसे बिहार से मदद चाहिये, मिलती है। और जब सीमा पार बिहार में मुश्किलें होती हैं, नेपाल की जनता और व्यापारी, सेवाभाव से प्रस्तुत होते हैं।

1751 किलोमीटर लंबी भारतीय सीमा नेपाल से लगती है। इनमें भारत के पांच राज्यों की सीमाएं : बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और सिक्किम बाड़बंदी के बग़ैर हैं। सबसे लंबी सीमा बिहार की 756 किलोमीटर, और सबसे छोटी सीमा सिक्किम की मात्र 99 किलोमीटर है। बिहार के सात सीमावर्ती ज़िले- पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज हैं। नेपाल के हवाले से बहुत पुरानी कहावत इस्तेमाल होती रही, 'बेटी-रोटी का सम्बन्ध।' लेकिन, अब उसकी व्याख्या व्यापक है। बेटी-रोटी का सम्बन्ध केवल वोट बैंक तक महदूद नहीं है, विभिन्न दलों के जो प्रत्याशी खड़े होते हैं, उनके चुनावी खर्च का एक बड़ा हिस्सा नेपाल के उद्योग-व्यापार वाले वहन करते हैं।

वैसे 21 विधानसभा क्षेत्र हैं, जो बिलकुल बॉर्डर लाइन पर हैं। दरअसल, बेटी-रोटी

का कॉन्सेप्ट इन्हीं वजहों से शुरू होता है। लगभग हर तीसरे-चौथे परिवार की रिश्तेदारी नेपाल में दिखाई देती है। चुनांचे, जब नेपाल में चुनाव होता है, भारत वाले दोस्त, रिश्तेदार एक्टिव हो जाते हैं, उसी तरह जब भारत के इन पांच राज्यों में चुनाव होता है, नेपाल का सरोकार सामने आ जाता है।

लेकिन, चुनावी दायरा 21 विधानसभा क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। ऐसे सात सीमावर्ती ज़िले बिहार के हैं, जिनके मुख्यालय की राजनीतिक गतिविधियों में नेपाल के लोगों की दिलचस्पी बनी रहती है। चुनावी सभा चाहे दरभंगा में हो, या कि मोतिहारी में, राहुल-मोदी अथवा अमित शाह को देखने नेपाल के लोग पहुंच ही जाते हैं। बिहार में इस तरह के 60 से 65 ज़िले हैं, जिनके भावी विधायकों, मंत्रियों, सांसदों के 'गुड बुक' में बने रहने की कवायद नेपाल में चलती रहती है।

दूसरा, मुस्लिम फैक्टर भी है, लगभग 80 फ़ीसद मुस्लिम आबादी तराई क्षेत्र में है, शेष 20 प्रतिशत मुसलमान मुख्यतः काठमांडू, गोरखा और पश्चिम नेपाल की पहाड़ियों तक सीमित हैं। लेकिन, जो बॉर्डर लाइन के नेपाली मुसलमान हैं, बताना अब ज़रूरी नहीं रह गया, कि बिहार में होने वाले चुनाव में वो किसकी जीत के ख्वाहिशमंद हैं। आप देख सकते हैं, चम्पारण के ढाका तथा सीमांचल के चार ज़िले पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज वाले अल्पसंख्यकों का राब्ता, नेपाल में एक्टिव मुसलमानों से रहता है।

बिहार-नेपाल व्यापार के लिए बारा, पर्सा, महोत्तरी, मोरंग, धनुषा, सर्लाही, रौतहट, सुनसरी और झापा ज़िलों से जुड़े 10 ट्रांज़िट पॉइंट शामिल हैं। मुख्य व्यापार में कृषि उत्पाद, दूध प्रसंस्करण, नॉन-वोवन बैग निर्माण, पशुधन के लिए खनिज और विटामिन मिश्रण वाला उत्पादन, औषधि, पेट्रोलियम, लिथियम आयन सौर बैटरी, कॉस्मेटिक्स से लेकर कपड़े और इलेक्ट्रॉनिक सामान तक शामिल हैं। लेकिन अब इसमें नया तड़का लगा है, शराब और शबाब का, जिसने एक नई क़िस्म की कनेक्टिविटी दोनों देशों में पैदा की है।

वर्ष 2016 में बिहार में शराबबंदी होने के बाद से, नेपाल के सीमावर्ती शहरों में अल्कोहल इंडस्ट्री और उसका खुदरा कारोबार ज़बरदस्त रूप से रफ़्तार पकड़ने लगा है। नेपाल के सीमावर्ती इलाकों में होटल और रेस्टोरेंट भारतीय विज़िटर्स की वजह से गुलजार हैं। बॉर्डर पार करके शराब पीने का शगल कुछ नया नहीं था। लेकिन इन दिनों आप बीरगंज से लेकर बिराटनगर, इटहरी और राजबिराज जैसे शहरों को जाकर देख आइये, चुनाव के समय शराब की मांग डबल हो गई है।

नौ वर्षों में नेपाल, बिहार वालों के लिए 'लीकर डेस्टिनेशन' बन चुका है। अब चूंकि, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, उनके समर्थकों को 'अतिरिक्त ऊर्जा' चाहिए, तो नेपाली शहरों में शराब का धंधा और तेज़ हुआ है, विदेशों से शराब का आयात 12 फीसद बढ़ गया। नेपाल की शराब लॉबी चाहती है, कि बिहार में वैसी सरकार रहे, जो मद्यनिषेध जारी रखना चाहती हो। शराबबंदी से पहले बिहार में 3,142 करोड़ की सालाना आमदनी केवल शराब के ठेकों से सरकार को होती थी। अब आप मानकर चलें, विगत नौ वर्षों में लगभग 30 हज़ार करोड़ का राजस्व नेपाल सरक गया, मगर बिहार में शराबबंदी कामयाब नहीं हुई।

बिराटनगर के व्यापारी बताते हैं, 'बिहार सरकार द्वारा शराब पर बैन लगाने के बाद शराब की खपत बढ़ गई है। पहले हर दिन करीब सौ-डेढ़ सौ भारतीय शराब पीने के लिए हमारे इलाके में आते थे, अब यह संख्या अचानक से डबल हो गई। रेस्टोरेंट के अलावा, होटलों को भी फायदा हुआ है, क्योंकि कुछ भारतीय रात भर रुकते हैं। वे शराब पीकर बॉर्डर पार बिहार नहीं जा सकते।'

एक स्थानीय बिजनेसमैन बताते हैं, 'अमीर भारतीय महंगे होटलों में रुकते हैं, जबकि कम आय वाले लोग सस्ते होटलों में जाते हैं।' कोसी बैराज, कुनौली बाज़ार और सखाड़ा जैसे इलाकों में शराब ढूंढ रहे भारतीयों की भारी भीड़ देखी जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, पटना, दरभंगा, मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर जैसे बिहार के बड़े शहरों से भी लोग राजबिराज, बीरगंज और नेपाल के दूसरे सीमावर्ती शहरों में आते हैं। चुनाव के समय पेटी भर-भर के बिहार में शराब की होम डिलीवरी हो रही है।

'पीपुल टू पीपुल कनेक्टिविटी' का दूसरा उदाहरण बिहार में कुकुरमुत्ते की तरह उग आई ऑर्केस्ट्रा पार्टी है। उनमें ढुमके लगाने वाली अधिकांश बालाएं नेपाल से मंगाई जाती हैं। सामाजिक-धार्मिक उत्सव हो, अथवा चुनाव, नेपाल से आई 'भोजपुरी डांस कलाकार' नेताओं के प्रचार और मनोरंजन के काम आ रही हैं। नेपाली डांसर बताती हैं, 'हमें राजनीतिक कार्यकर्ताओं के मनोरंजन के लिए जाना पड़ता है।' बिहार की राजनीति में रौनक लाने के वास्ते अश्विनी शाही, बन्दना नेपाल जैसी भोजपुरी डांसरों की मांग बढ़ गई है। मीडिया वाले भोजपुरी गानों और डांस में अश्लीलता पर सवाल पूछते हैं, नेता मुंह घुमा लेते हैं, अथवा सवाल इग्नोर कर देते हैं। किसी भी पार्टी के एजेंडे में अश्लीलता पर रोक का प्रण नहीं पाइयेगा। बिहार में यदि सचमुच ग़रीबी और बेरोज़गारी है, तो ये सब धंधा चल कैसे रहा है?

प्रेरणा

स्वदेशी का गर्व : डॉ. कलाम का अद्भुत उपहार जिसने भारत की पहचान को विश्व पटल पर

भारत के मिसाइल मैन कहे जाने वाले और करोड़ों भारतीयों के प्रेरणास्रोत डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम केवल वैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि स्वदेशी भावना के सच्चे प्रतीक थे। वे मानते थे कि किसी देश की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब वह अपने ज्ञान, अपने संसाधनों और अपनी तकनीक पर विश्वास करे। इसी सोच से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग उनके जीवन का वह अध्याय है जब उन्होंने पोलियोग्रस्त बच्चों के जीवन को सरल और सम्मानजनक बनाने के लिए एक अनोखा प्रयोग किया।

यह वह समय था जब भारत में पोलियो से प्रभावित बच्चों को भारी-भरकम लोहे के कैलिपर पहनने पड़ते थे। ये कैलिपर इतने वज़नी होते थे कि बच्चे चल तो पाते थे, लेकिन हर कदम मानो उनके लिए एक परीक्षा होता था। इस समस्या को देखकर डॉ. कलाम का मन विचलित हुआ। उन्होंने ठान लिया कि वे इन बच्चों के लिए कुछ ऐसा करेंगे जिससे उनके जीवन में सहजता और आत्मविश्वास लौट आए।

उन्होंने तीन प्रमुख संस्थानों — रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO), ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (AIIMS) और मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी — के साथ मिलकर एक नई खोज की दिशा में काम शुरू किया। महीनों के अथक परिश्रम और प्रयोगों के बाद उन्होंने कार्बन कंपोज़िट सामग्री से बने हल्के कैलिपर तैयार किए। इन कैलिपरों का वजन पारंपरिक कैलिपर की तुलना में लगभग दस गुना कम था, जिससे पोलियोग्रस्त बच्चे आसानी से चलने, दौड़ने और खेलने लगे।

जब यह नवाचार सफल हुआ, तो पूरे देश में डॉ. कलाम के इस प्रयास की चर्चा होने लगी। एक दिन प्रेस वार्ता में एक पत्रकार ने उनसे कहा, "सर, आपने स्वदेश में हल्के कैलिपर का निर्माण करके पूरे विश्व के सामने भारत का सिर ऊंचा कर दिया है।" तभी दूसरा पत्रकार बोला, "भारत अब आत्मनिर्भर बन गया है और स्वदेश में ही अनेक तकनीकों का निर्माण कर सकता है।"

डॉ. कलाम मुस्कुराए — वह मुस्कान जो हमेशा उनके चेहरे पर ज्ञान और विनम्रता का संगम बनकर चमकती थी। उन्होंने शांत स्वर में उत्तर दिया, "मैं तो स्वयं यह कहता हूं कि हमारे पास आश्चर्यजनक सफलताओं का पूरा इतिहास है। भारत प्रारंभ से ही विश्वगुरु के रूप में प्रसिद्ध रहा है। हमारा भारत हर चीज में अग्रणी है। गेहूं और चावल उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। दूध के उत्पादन में पहला स्थान है। दूरसंचार उपग्रह के विकास में हम अग्रणी हैं। हमारी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास लाजवाब हैं। हमें हर स्वदेशी सफलता पर गर्व करना चाहिए।"

उनकी यह बात केवल पत्रकारों के लिए नहीं थी, बल्कि पूरे देश के लिए एक सन्देश थी — कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक शब्द नहीं, बल्कि एक मानसिकता है। स्वदेशी का अर्थ है अपने देश की क्षमता पर विश्वास करना, अपनी मिट्टी से जुड़ना और अपने वैज्ञानिक, तकनीकी व बौद्धिक सामर्थ्य को पहचानना।

डॉ. कलाम का यह प्रयोग बाद में लाखों पोलियोग्रस्त बच्चों के जीवन में वरदान साबित हुआ। जिन बच्चों को कभी स्कूल तक जाने में कठिनाई होती थी, वे अब खेल-कूद में भाग लेने लगे। किसी बच्चे ने पहली बार बिना सहारे के चलना सीखा, तो किसी के चेहरे पर मुस्कान लौट आई।

यह कहानी केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि की नहीं, बल्कि उस स्वदेशी भावना की है जिसने भारत को आत्मविश्वास दिया, यह एहसास दिलाया कि हम किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। डॉ. कलाम का जीवन हमें यह सिखाता है कि जब विज्ञान करुणा से जुड़ता है, तब वह समाज में बदलाव की सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है।

आज जब भारत "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे अभियानों की ओर बढ़ रहा है, तब डॉ. कलाम की यह स्वदेशी भावना पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो उठती है। उनकी प्रेरणा से हम सभी को यह याद रखना चाहिए कि देश की असली ताकत बाहरी संसाधनों में नहीं, बल्कि अपने लोगों की प्रतिभा, अपने वैज्ञानिकों के ज्ञान और अपने समाज के सामूहिक संकल्प में है।

डॉ. कलाम ने यह साबित किया कि स्वदेशी केवल उत्पाद नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा है। यही वह भावना है जो भारत को फिर से विश्वगुरु बनाने की दिशा में ले जा सकती है। यही है सच्चा "स्वदेशी का गर्व।"

सरदार पटेल की विरासत संजोते मोदी, राजनीतिक यात्रा और शासन के सिद्धांतों की झलक

भारत को जब 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली, तब अंग्रेज एक खंडित उपमहाद्वीप छोड़ गए। विभाजन के आघात के साथ-साथ 560 से अधिक रियासतें भी थीं, जिनमें से प्रत्येक के अपने शासक और महत्वाकांक्षाएं थीं। नवस्वतंत्र राष्ट्र ने खुद को एक दोराहे पर पाया। एकता के अभाव में कठोर मेहनत से प्राप्त स्वतंत्रता खोखली होती। ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर एक व्यक्ति ने चुनौती स्वीकार की और वे थे सरदार वल्लभभाई पटेल-देश के पहले उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री।

दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प और अदम्य इच्छाशक्ति के साथ उन्होंने इन रियासतों को एक राष्ट्र में मिलाया, जिससे स्वतंत्र भारत को उसका आकार और शक्ति मिली। राष्ट्र को एकीकृत करने वाले इस महान व्यक्तित्व के अद्वितीय प्रयासों को वह मान्यता नहीं मिली, जिसके वे वास्तव में हकदार थे। दशकों बाद प्रधानमंत्री मोदी ने इस विसंगति को पहचाना और पटेल की विरासत को संरक्षित करने तथा उसका सम्मान करने के लिए निर्णायक कदम उठाए।

नरेन्द्र मोदी की राजनीतिक यात्रा और शासन के सिद्धांत में सरदार पटेल के प्रभाव साफ दिखते हैं। वे पटेल को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के अपने दृष्टिकोण के पीछे का पथप्रदर्शक मानते हैं। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने सरदार पटेल की विरासत को सार्थक कार्यों के माध्यम से सम्मानित किया। उन्होंने अहमदाबाद में सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय स्मारक का जीर्णोद्धार कराया तथा उसे एक प्रमुख संग्रहालय और सांस्कृतिक केंद्र में परिवर्तित किया।

हर साल 31 अक्टूबर को पटेल जयंती पर मोदी ने युवाओं को उनके योगदान के बारे में जानकारी देने के लिए कार्यक्रम आयोजित करने शुरू किए। इनमें एकता यात्रा राष्ट्रीय एकत्व की भावना को बढ़ावा देने के एक सशक्त मंच के रूप में उभरी। सरदार पटेल के प्रति मोदी की श्रद्धा के सबसे प्रभावशाली प्रतीक के रूप में गुजरात में नर्मदा नदी के तट पर स्टैच्यू आफ यूनिटी स्थापित हुई। मुख्यमंत्री मोदी द्वारा परिकल्पित और 31 अक्टूबर, 2018 को प्रधानमंत्री के रूप में उनके द्वारा अनावृत्त यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। इसकी 182 मीटर की ऊंचाई प्रतीकात्मक रूप से गुजरात के 182 विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है।

मोदी ने इस प्रतिमा के निर्माण में पूरे देश को शामिल करने के लिए 'लोहा अभियान' शुरू किया, जिसमें देश के छह लाख से अधिक गांवों के किसानों ने लोहे के औजार दान किए। इस अभियान ने राष्ट्रीय एकता की भावना को मूर्त रूप दिया। स्टैच्यू आफ यूनिटी के निर्माण के दौरान प्रारंभिक डिजाइन में सरदार पटेल को कुर्ता-पायजामा पहने दिखाया गया था। मोदी ने इस पर बल दिया कि प्रतिमा में वे धोती पहने हुए हों, जैसे किसान पारंपरिक रूप से पहनते हैं। इससे एक बड़ी चुनौती उत्पन्न हुई, क्योंकि ऊंची प्रतिमाओं का आधार आमतौर पर चौड़ा बनाया जाता है। फिर भी मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि पटेल की पोशाक में कोई बदलाव किए बिना हरसंभव उपाय किए जाएं, क्योंकि उनका मानना था कि सरदार पटेल देश के किसानों के प्रतीक हैं।

सरदार पटेल के अधूरे सपनों में से एक सरदार सरोवर बांध परियोजना मुख्यमंत्री मोदी के प्रयासों से साकार हुई। पटेल इस परियोजना की कल्पना गुजरात की बिजली-पानी संबंधी चुनौतियों के समाधान के रूप में कर रहे थे। दशकों तक बांध की ऊंचाई बढ़ाने के विरोध के कारण यह अपनी पूरी क्षमता हासिल नहीं कर सकी। मुख्यमंत्री मोदी ने इस परियोजना को पूरा करने का संकल्प लिया। इस परियोजना ने गुजरात के बिजली-पानी परिदृश्य में बदलाव लाते हुए लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया।

आज जब मोदी के नेतृत्व में निर्मित नहरों के विशाल नेटवर्क के माध्यम से नर्मदा का पानी गुजरात के प्रत्येक गांव तक पहुंच रहा है, तो यह उस सपने की पूर्ति के रूप में सामने आता है, जिसकी कल्पना पटेल ने दशकों पहले की थी। सरदार पटेल द्वारा परिकल्पित सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण पूरे भारत में तीर्थस्थलों के विकास के लिए एक मार्गदर्शक माडल बना। मुख्यमंत्री के रूप में मोदी ने सरदार पटेल की ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए कई पहलों का नेतृत्व किया।

सरदार पटेल का राजनीतिक रूप से एकीकृत भारत का सपना जम्मू-कश्मीर के मामले में साकार नहीं हो सका था। पटेल हमेशा चाहते थे कि जम्मू-कश्मीर को भारत में पूरी तरह मिला दिया जाए, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने अन्य रियासतों को मिलाया। जम्मू-कश्मीर एकमात्र ऐसी रियासत थी, जिसे सरदार पटेल ने व्यक्तिगत रूप से नहीं संभाला था, क्योंकि यह प्रधानमंत्री नेहरू के अधीन थी और इसलिए वहां अनुच्छेद 370 की तलवार लटकती रही। पीएम मोदी ने पटेल के एक विधान-एक निशान के सिद्धांत को आगे बढ़ाया और अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करके जम्मू-कश्मीर को शेष राष्ट्र के साथ पूरी तरह एकीकृत कर दिया।

महिला सशक्तीकरण को लेकर सरदार पटेल की प्रतिबद्धता महिलाओं को नगरपालिका चुनाव लड़ने की अनुमति देने वाले उनके 1919 के प्रस्ताव से परिलक्षित हुई थी। पीएम मोदी ने महिला आरक्षण विधेयक पारित कराया, जिससे संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का मार्ग प्रशस्त हुआ। वास्तव में दोनों नेताओं का जीवन राष्ट्र के लिए प्रतिबद्धता का उदाहरण है।

अभियान

चार महीने बाद योगनिद्रा से जागेंगे भगवान विष्णु: देव उठानी एकादशी पर फिर आरंभ होंगे शुभ

हिंदू धर्म की मान्यताओं में एकादशी तिथि का अत्यंत विशेष स्थान है, और उनमें भी कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को सबसे पवित्र माना गया है। यही वह दिन है जब भगवान विष्णु अपनी चार महीने की योगनिद्रा से जागते हैं। इसे "देवउठनी एकादशी" या "प्रबोधिनी एकादशी" कहा जाता है। माना जाता है कि आषाढ़ शुक्ल एकादशी के दिन भगवान विष्णु क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या पर विश्राम करने चले जाते हैं, और ठीक चार महीने बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागकर पुनः सृष्टि के पालन का कार्य आरंभ करते हैं। इस अवधि को चातुर्मास कहा जाता है, जो भक्ति, साधना और संयम का काल माना जाता है।

इस वर्ष कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 1 नवंबर 2025 को सुबह 9 बजकर 11 मिनट से शुरू होकर 2 नवंबर को सुबह 7 बजकर 31 मिनट तक रहेगी। पंचांग के अनुसार व्रत 1 नवंबर को ही

रखा जाएगा। यह दिन न केवल भगवान विष्णु के जागरण का प्रतीक है, बल्कि समस्त शुभ और मांगलिक कार्यों के पुनः आरंभ का संकेत भी है। चार महीनों तक विवाह, गृहप्रवेश, मुंडन, उपनयन और अन्य मांगलिक कार्यों पर रोक मानी जाती है। लेकिन देवउठनी एकादशी के दिन से यह निषेध समाप्त हो जाता है और जीवन के सभी शुभ कार्यों के लिए द्वार पुनः खुल जाते हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में जाते हैं, तब ब्रह्माण्ड के समस्त देवता भी विश्राम अवस्था में चले जाते हैं। इस समय भक्ति, तप, जप और व्रत का महत्व बढ़ जाता है। देवउठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु का पूजन तुलसी और शालिग्राम के साथ करने की परंपरा है। इस दिन तुलसी विवाह का उत्सव भी मनाया जाता है, जो भगवान विष्णु और तुलसी माता के दिव्य मिलन का प्रतीक है। माना जाता है कि इस दिन तुलसी विवाह का आयोजन करने से जीवन में वैवाहिक सुख, समृद्धि और शांति आती है।

इस वर्ष देवउठनी एकादशी पर अद्भुत योग बन रहे हैं। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस दिन ब्रह्म योग, शुभ कर्म योग और सिद्धि योग जैसे संयोगों का निर्माण होगा, जो विशेष रूप से वृषभ, कन्या और मकर राशि वालों के लिए अत्यंत लाभकारी रहेंगे। इन राशियों के जातकों के लिए धन, सौभाग्य और सफलता के नए अवसर खुल सकते हैं। ग्रहों की स्थिति यह संकेत दे रही है कि भगवान विष्णु की विशेष कृपा इन जातकों पर बनी रहेगी और उनके जीवन में रुकावटें दूर होंगी।

देवउठनी एकादशी का यह पर्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दिन श्रद्धालु रात्रि में दीपदान करते हैं, भजन-कीर्तन गाते हैं और भगवान विष्णु का जागरण करते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन व्रत रखकर और भगवान विष्णु की पूजा करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भक्तजन इस दिन सुबह स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं, भगवान विष्णु के समक्ष दीपक प्रज्वलित करते हैं, तुलसी दल अर्पित करते हैं और मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करते हैं—

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः"।

यह माना जाता है कि इस मंत्र के जप से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और साधक को सुख, समृद्धि और दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं।

देवउठनी एकादशी का यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि जैसे भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागकर सृष्टि के कार्यों में पुनः प्रवृत्त होते हैं, वैसे ही हमें भी अपने भीतर की जड़ता और आलस्य से जागकर जीवन के शुभ कार्यों में लग जाना चाहिए। यह दिन भक्ति, जागृति और आत्मबोध का प्रतीक है। इसीलिए इसे केवल एक व्रत नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक पुनर्जागरण का उत्सव माना जाता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" के गौरव का महोत्सव

भारत पर्व २०२५

भारत की विविध संस्कृतियों, कला और व्यंजनों का अद्‌भुत समन्वय एक ही स्थान पर!

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा - स्टैच्यू ऑफ युनिटी, राष्ट्रीय उत्सव का केंद्र बनेगी, क्योंकि यहाँ एकतानगर में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के अंतर्गत 'भारत पर्व २०२५' का भव्य आयोजन किया गया है। यह महोत्सव थीम पवेलियन, क्षेत्रीय व्यंजनों, पारंपरिक हस्तशिल्प और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को साझा मंच प्रदान करेगा, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता में उसकी अटूट एकता को प्रतिबिंबित करेगा।

भारत पर्व २०२५

१ से १५ नवंबर, २०२५

सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
डैम व्यू पॉइन्ट-1,
वॅली ऑफ फ्लावर के सामने

थीम पवेलियन

फूड स्टॉल्स

क्राफ्ट स्टॉल्स
जंगल सफारी के पास

अन्य आकर्षण
लेज़र, लाइट और साउंड शो • जंगल सफारी और डायनो ट्रेल • सरदार सरोवर डेम और बोटिंग • कैक्टस गार्डन
बटरफ्लाई गार्डन • आरोग्य वन • चिल्ड्रन न्यूट्रिशन पार्क • विश्व वन

स्टैच्यू ऑफ युनिटी, एकतानगर

'भारत पर्व' माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की राष्ट्रीय शक्ति का जीवंत संदेश है।
श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में एकता नगर में राष्ट्रीय एकता दिवस का शानदार समारोह

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सान्निध्य में देशभक्ति के जोश के साथ अर्धसैनिक बलों की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा दमदार परेड

-: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी :-

- यह लौह पुरुष सरदार पटेल का भारत है, सुरक्षा तथा सम्मान के लिए कभी समाधान नहीं करता है
- देश की एकता व अखंडता के लिए चार स्तंभों पर आधारित सरकार द्वारा जन-जन को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है
- जब तक देश नक्सलवाद-माओवाद के आतंक से पूरी तरह मुक्त न हो, तब तक यह सरकार शांत नहीं बैठेगी
- समग्र देश में करोड़ों लोगों ने आज एकता की शपथ ली है, जो देश की एकता को प्रोत्साहन देने के संकल्प का प्रतीक है

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में शुक्रवार को एकता नगर में लौह पुरुष तथा अखंड भारत के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती का शानदार समारोह आयोजित हुआ। सरदार साहब की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सान्निध्य में देशभक्ति के जोश-उत्साह के साथ अर्धसैनिक बलों की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा दमदार परेड आयोजित की गई। प्रधानमंत्री ने भारत माता की भक्ति को देश के प्रत्येक नागरिक की सबसे बड़ी पूजा बताते हुए कहा कि देश की एकता व अखंडता के लिए चार स्तंभों पर आधारित सरकार द्वारा जन-जन को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में पाद-पूजन कर राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह का प्रारंभ कराया। 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को मजबूत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि एकता राष्ट्र एवं समाज के अस्तित्व की मूल आधार है। जब तक समाज में एकता है, तब तक राष्ट्र की अखंडता सुरक्षित है। विकसित भारत के लक्ष्य की ओर पहुँचने के लिए एकता तोड़ने वाले हर षड्यंत्र को एकता की शक्ति से विफल बनाना होगा। भारत की एकता के चार मजबूत आधार स्तंभ हैं, जिसमें पहला स्तंभ है सांस्कृतिक एकता, जो हजारों वर्षों से राजनीतिक परिस्थितियों से अलग भारत को एक चेतना राष्ट्र बनाती है।

उन्होंने कहा कि भारत की एकता का दूसरा स्तंभ भाषा की एकता है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ तथा बोलियाँ देश के स्वाभिमान, रचनात्मक विचारधारा और विविधता की जीवंत प्रतीक हैं। किसी समाज, सत्ता या संप्रदाय ने कभी भी भाषा को हथियार बनाकर एक पर थोपने का प्रयास नहीं किया है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता का तीसरा स्तंभ भेदभावमुक्त विकास है। गरीबी तथा भेदभाव सामाजिक ताने-बाने की सबसे बड़ी कमजोरी हैं। सरदार पटेल गरीबी के विरुद्ध दीर्घकालीन योजना पर काम करना चाहते थे और कहते थे कि अगर आजादी 10 वर्ष पहले मिली होती, तो 1947 तक भारत खाद्य समस्या के संकट से मुक्त हो गया होता। सरदार पटेल ने रजवाड़ों के विलय जैसी चुनौती की समस्या को जैसे सुलझाया, वैसे अनाज की किल्लत की चुनौती की समस्या भी हल की होती। इस सरकार ने सरदार साहब के अधूरे संकल्प को पूरा कर एक दशक में 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि एकता का चौथा व अंतिम स्तंभ कनेक्टिविटी – दिलों का जुड़ाव है, जो आधुनिक भारत को विश्व के केन्द्र में ला रहा है। रिकॉर्ड हाईवे-एक्सप्रेसवे, वंदे भारत तथा नमो भारत जैसी ट्रेनों द्वारा रेल को ट्रांसफॉर्म कर, छोटे शहरों को एयरपोर्ट्स से जोड़कर उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक की दूरियाँ कमी की गई हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल इतिहास लिखने में समय व्यय करने के स्थान पर इतिहास बनाने पर मेहनत करने के हिमायती थी, जिन्होंने नीतियों एवं निर्णयों द्वारा आजादी के बाद 550 से अधिक रजवाड़ों को एकसूत्र में बांधकर देश को एक बनाया था। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का विचार उनके लिए सर्वोपरि था। श्री मोदी ने कहा कि केन्द्र सरकार की कार्यनीति में भारत की एकता-अखंडता का यह विचार मुख्य स्थान पर है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय एकता दिवस एकता का महापर्व है। उन्होंने कहा कि जिस तरह हम 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस तथा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में गौरवपूर्वक मनाते हैं, उसी प्रकार यह (एकता) दिवस प्रेरणा, गर्व एवं संकल्प का पवित्र पल है। समग्र देश में करोड़ों लोगों ने आज देश की एकता की शपथ ली है, जो देश की एकता को प्रोत्साहन देने के संकल्प का प्रतीक है।

एकता नगर में एकता मॉल तथा एकता गार्डन जैसे प्रयासों के उल्लेख के साथ प्रधानमंत्री ने कहा कि देश की एकता को नुकसान पहुंचाएं, ऐसी बातों या विचारों से दूर रहना चाहिए। यह केवल राष्ट्रीय कर्तव्य ही नहीं, बल्कि सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि भी है। भारत माता की भक्ति देश के प्रत्येक नागरिक के लिए सबसे बड़ी पूजा है और आज के युग में देश की यह जरूरत है, जो प्रत्येक भारतीय के लिए संदेश, संकल्प तथा कार्यपथ का मार्गदर्शन करती है। देश की संप्रभुता को ही अपना एक मात्र लक्ष्य मानने वाले सरदार पटेल की नीतियों की याद दिलाते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सरदार पटेल के निधन के बाद के वर्षों में तत्कालीन सरकारों में यह गंभीरता तथा अडिगता कम रही थी। कश्मीर में हुई भूलें, पूर्वोत्तर में उत्पन्न हुई समस्याएँ तथा देशभर में फले-फूले नक्सलवाद, माओवाद व आतंकवाद देश की संप्रभुता के लिए चुनौती समान थे, परंतु तत्कालीन सरकारों ने सरदार पटेल की नीतियों का अनुकरण करने के स्थान पर देश की संप्रभुता के प्रति अनदेखी की, जिसके विपरीत परिणाम हिंसा, रक्तपात तथा देश के विभाजन के रूप में देश ने भोगे।

श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात की दो दिवसीय यात्रा के बाद शुक्रवार को वडोदरा हवाई अड्डे से विमान से दिल्ली जाने के लिए रवाना हो गए। उन्हें हवाई अड्डे से विदाई दी गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दो दिवसीय यात्रा के दौरान एकता नगर में विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया और राष्ट्रीय एकता दिवस परेड तथा सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में उपस्थित रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जब वडोदरा हवाई अड्डे से दिल्ली के लिए रवाना हुए, तब महापौर श्रीमती पिंकीबेन सोनी, पुलिस आयुक्त श्री नरसिम्हा कोमार तथा जिला कलेक्टर श्री अनिल धामेलिया उपस्थित रहे।

उन्होंने कहा कि सरदार पटेल अखंड भारत के निर्माण के लिए लगातार प्रयासरत रहे। कश्मीर समस्या के निराकरण के लिए सरदार साहब द्वारा दिए गए सुझावों पर यदि अमल किया जाता, तो आज संपूर्ण कश्मीर भारत का अभिन्न अंग होता। लेकिन, तत्कालीन सरकार ने उनकी यह इच्छा पूरी नहीं होने दी। उन्होंने कहा कि कश्मीर को अलग विधान और अलग निशान देकर विभाजित किया गया, जो तत्कालीन सरकार की कमजोर नीतियों का परिणाम था। इस गलती की आग में देश दशकों तक सुलगता रहा, क्योंकि कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान के अवैध कब्जे में चला गया और वहां से राज्य-प्रायोजित आतंकवाद को हवा मिली, जिसकी कीमत देश ने अनेक जानें और संसाधनों के रूप में चुकाई। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने सरदार पटेल के एक भारत के विजन को भुला दिया था, लेकिन 2014 के बाद पूरे देश ने उनकी प्रेरणा से अडिग इच्छाशक्ति का अनुभव किया है। अनुच्छेद 370 की बेड़ियों को तोड़कर कश्मीर को पूरी तरह से मुख्यधारा में शामिल किया गया है। इसके कारण पाकिस्तान और आतंक के आकाओं को भारत की असली क्षमता का पता चल गया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने पूरी दुनिया को बता दिया है कि यदि कोई भारत की ओर आंख उठाने की जुर्रत करेगा, तो भारत उसका मुंहतोड़ जवाब देगा। भारत हर बार पहले से कहीं बड़ा और निर्णायक जवाब देता है। यह लौह पुरुष सरदार पटेल का भारत है, जो अपनी सुरक्षा और सम्मान के साथ कभी समझौता नहीं करता।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में पिछले 11 वर्षों में भारत की सबसे बड़ी सफलता नक्सलवाद-माओवाद आतंक की कमर तोड़ना रही है। 2014 से पहले नक्सली देश के अंदर से ही अपनी हुकूमत चलाते थे, संविधान का पालन नहीं होता था, पुलिस-प्रशासन लाचार नजर आता था, सड़कें, स्कूल और अस्पतालों पर हमले होते थे और नए फरमान जारी होते थे। लेकिन, इस सरकार ने उन पर प्रचंड प्रहार किया, अर्बन नक्सलों और उनके समर्थकों को मुंहतोड़ जवाब दिया। वैचारिक लड़ाई जीती और नक्सली इलाकों में जाकर उन्हें मात दी गई।

एकता नगर की धरती से सरदार पटेल के सान्निध्य में प्रधानमंत्री ने दृढ़संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि जब तक देश नक्सलवाद-माओवाद के आतंक से पूरी तरह से मुक्त नहीं होगा, तब तक यह सरकार रुकेगी नहीं।

उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा को घुसपैठियों से भी बड़ा खतरा है। दशकों से ये विदेशी घुसपैठिये देश में घुसकर देशवासियों के संसाधनों पर कब्जा जमाते हैं, डेमोग्राफी का संतुलन बिगाड़ते हैं और एकता पर प्रहार करते हैं। भूतकाल की सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के लिए आंखें मूंद रखी थीं। लेकिन, अब पहली बार देश ने इस बड़े खतरे के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई लड़ने का संकल्प किया है और लाल किले से 'डेमोग्राफी मिशन' का ऐतिहासिक ऐलान भी किया है।

इस विषय को गंभीरता से उठाते हुए प्रधानमंत्री ने चेतावनी देते हुए कहा कि कई लोग देशहित पर निजी हित को प्राथमिकता देकर घुसपैठियों को अधिकार दिलाने के लिए राजनीतिक लड़ाई लड़ रहे हैं, जिन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अतीत की तरह देश में फिर से विभाजन हो जाए। लेकिन सच्चाई यह है कि यदि देश की सुरक्षा और पहचान खतरे में पड़ेगी, तो प्रत्येक व्यक्ति खतरे में होगा। इसलिए राष्ट्रीय एकता दिवस पर फिर से संकल्प लें कि हम भारत में रहने वाले प्रत्येक घुसपैठिये को बाहर निकालकर ही रहेंगे, ताकि राष्ट्र की अखंडता और अस्तित्व को मजबूत कर सकें। श्री मोदी ने कहा कि अतीत की सरकारों ने देश की विभुतियों को अपमानित किया था। इस सरकार ने उन्हें सम्मान देने का महाकार्य किया है। उनके स्मारक बनाकर यथोचित सम्मान भी दिया है। अंग्रेजों से विरासत में मिली गुलामी की मानसिकता को बदल दिया है।

सरदार पटेल की भावना को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें सबसे अधिक खुशी देश के लिए काम करने में मिलती थी, और आज भी यही आह्वान है – मां भारती की साधना प्रत्येक देशवासी की सबसे बड़ी आराधना है। जब 140 करोड़ भारतवासी एक साथ खड़े होते हैं, तो पहाड़ भी रास्ता दे देते हैं, जब एक स्वर में बोलते हैं, तो वे शब्द भारत की सफलता का उद्घोष बन जाते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि हम बंटेंगे नहीं, कमजोर नहीं पड़ेंगे, 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को मजबूत कर विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने एकता परेड के बाद मार्ग पर निकलकर उपस्थित लोगों का अभिवादन स्वीकार किया।

इस अवसर पर सांसद, विधायक और मुख्य सचिव सहित कई उच्च अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शनिवार को एकता नगर में 'भारत पर्व-2025' का उद्घाटन करेंगे

1 से 15 नवंबर तक चलने वाले भारत पर्व में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना होगी उजागर

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में शनिवार, 1 नवंबर की शाम 'भारत पर्व-2025' का उद्घाटन करेंगे। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और पर्यटन राज्य मंत्री डॉ. जयराम गामित भी मौजूद रहेंगे।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती देश भर में मनाई जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और प्रेरणा से इस वर्ष एकता नगर में यह कार्यक्रम नई दिल्ली में होने वाले गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय समारोह की तरह ही भव्य तरीके से मनाया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत 1 से 15 नवंबर, 2025 के दौरान आयोजित होने वाले भारत पर्व में देश की 'विविधता में एकता' की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले अनेक सांस्कृतिक और देशभक्ति के कार्यक्रमों के माध्यम से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को उजागर किया जाएगा।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय और राज्य सरकार के पर्यटन विभाग तथा युवा सेवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियां विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर में पहली बार भारत पर्व का आयोजन किया जा रहा है।

भारत पर्व में भारत की विभिन्न सांस्कृतिक विरासत, खान-पान परंपरा और कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही, प्रतिदिन शाम को दो अलग-अलग राज्य अपनी अनोखी परंपराओं और कलाओं का प्रदर्शन करेंगे। 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में विशेष प्रस्तुति भी दी जाएगी।

भारत पर्व के अंतर्गत जंगल सफारी के पास 45 फूड स्टॉल और एक लाइव स्टूडियो किचन का आयोजन किया गया है, जहां विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के व्यंजन परोसे जाएंगे।

इसके अलावा, यहां लगाए गए 55 हस्तकला स्टॉलों में भारत के विभिन्न राज्यों की रंगबिरंगी एवं नवीन हस्तकलाओं को प्रदर्शित किया जाएगा। भारत दर्शन पवेलियान में विभिन्न राज्यों के पवेलियन बनाए गए हैं, जहां उन राज्यों के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों और सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाया गया है।

भावनगर रेलवे मंडल पर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

(जीएनएस)। "भारत के लौह पुरुष" सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर, 2025 को पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल पर राष्ट्रीय एकता दिवस हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल कार्यालय परिसर में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री वर्मा द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता और अखंडता बनाए रखने की शपथ दिलाई गई। समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों में देश की एकता, अखंडता एवं सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को सुदृढ़ करना है।

इस कार्यक्रम का सफल आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न शाखाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और सभी ने एक स्वर में देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने का संकल्प दोहराया।

अंत में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्र निर्माण में दिए गए अमूल्य योगदान को नमन किया तथा उनके आदर्शों और विचारों पर चलने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आयोजित एकता परेड की झलकियां

(जीएनएस)। गांधीनगर : लौह पुरुष सरदार पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर-स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में राष्ट्रीय एकता दिवस का शानदार समारोह आयोजित हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में भव्य एकता परेड निकाली गई, जिसमें विभिन्न राज्यों और सुरक्षा बलों की टुकड़ियों ने भाग लिया।

एकता दिवस समारोह की मुख्य झलकियां

- देश के विभिन्न राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों, सीएपीएफ और पुलिस बलों की लगभग 54 झांकियों, बैंड और ध्वजों ने अनूठा आकर्षण जमाया।
- भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति दी गई, जिसमें 'लौह पुरुष नमस्तुत्यम' पर 800 कलाकालों ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया।
- सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर दो हेलीकॉप्टरों द्वारा सरदार साहब की प्रतिमा पर पुष्प वर्षा कर भाववंदना की गई।
- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 100 संगीतकारों ने ताशा, शहनाई और करतालों के साथ वंदेमातरम गीत की प्रस्तुति दी।
- सीआईएसएफ की महिला जवानों ने साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया।
- सीआरपीएफ की महिला कर्मियों ने मार्शल आर्ट और निहत्थे युद्ध अभ्यास का प्रदर्शन किया। बिना हथियार वाले युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए सेवा और निष्ठा की भावना के साथ हैरतअंगेज करतब प्रस्तुत किए। जिसमें 36 पुरुष और 6 महिलाओं ने हिस्सा लिया।
- भारतीय वायु सेना के नौ विमानों सूर्य किरण टीम ने 9 विमानों के साथ एयर शो का अद्भुत प्रदर्शन किया। नौ जांबाज पायलटों की टीम ने शानदार करतब प्रस्तुत कर आकाश को देशभक्ति के रंगों से रंग दिया। टीम ने सरदार साहब को आकाशीय सलामी दी।

अहमदाबाद मंडल पर राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में "रन फॉर यूनिटी" एवं सत्यनिष्ठा की शपथ का आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर 31.10.2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रिवरफ्रंट उस्मानपुरा से रिवरफ्रंट हाउस बिल्डिंग तक "रन फॉर यूनिटी" वॉक का आयोजन किया गया तथा मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने मंडल कार्यालय, अहमदाबाद परिसर में रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण हेतु "राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा" बनाए रखने, आपसी भाईचारे को सुदृढ़ करने तथा सदैव सत्यनिष्ठ बने रहने की शपथ दिलाई गई। अपने दैनिक कार्यों में ईमानदारी और पारदर्शिता के मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सत्यनिष्ठा केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बननी चाहिए। हमें अपने देश को एकजुट, सुरक्षित और विकसित रखने के लिए अपने दैनिक जीवन में एकता, अखंडता और राष्ट्र की सुरक्षा के सिद्धांतों को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने सभी से धर्म, जाति और पंथ की विविधता के बावजूद सामाजिक समरसता एवं सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने का आग्रह किया।

"राष्ट्रीय एकता दिवस" पर मंडल रेल प्रबंधक ने दिलाई रेलकर्मियों को एकता शपथ

(जीएनएस)। लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस वडोदरा मंडल में हर्षोल्लास एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने की राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाई। उन्होंने सरदार पटेल की दूरदर्शिता, नेतृत्व क्षमता और देश की एकता को सुदृढ़ करने में उनके महान योगदान को स्मरण किया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री तेजराम मीना , विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे ने स्क्रैप बिक्री में 300 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे ने महत्वाकांक्षी "मिशन ज़ीरो स्क्रैप" पहल के अंतर्गत अपने सभी रेलवे प्रतिष्ठानों और इकाइयों को स्क्रैप-मुक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 में पश्चिम रेलवे ने 29 अक्टूबर, 2025 तक कुल 302 करोड़ रुपये से अधिक की स्क्रैप बिक्री का लक्ष्य हासिल कर लिया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, स्क्रैप बिक्री का प्रदर्शन रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित आनुपातिक लक्ष्य से लगभग 21% अधिक है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि पिछले वर्ष की रिकॉर्ड तिथि 13 नवंबर, 2024 से दो सप्ताह पहले हासिल की गई है, जब पश्चिम रेलवे ने 300 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया था।

इस उपलब्धि के साथ पश्चिम रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे के साथ स्क्रैप बिक्री में 300 करोड़ रुपये के क्लब में शामिल हो गया है, जिससे कुशल सामग्री प्रबंधन और संसाधन अनुकूलन में अग्रणी क्षेत्रों में से एक के रूप में इसकी स्थिति और मजबूत हो गई है।

पश्चिम रेलवे पर मनाया गया "राष्ट्रीय एकता दिवस"

(जीएनएस)। पहली तस्वीर में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए। दूसरी तस्वीर में वे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

भारत रत्न एवं भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने 31 अक्टूबर 2025 को चर्चगेट स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाई।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, दूरदर्शी राजनेता की 150वीं जयंती पश्चिम रेलवे के सभी छह मंडलों पर श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में एकता, अखंडता एवं राष्ट्र की सुरक्षा को बनाए रखने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए राष्ट्रीय एकता शपथ ली।